टी0 एस0 इलियट

प्रस्तुति
डॉ0 रमेश प्रताप सिंह
असि0 प्रो0 हिंदी विभाग
जे0एन0एम0पी0जी0 कॉलेज लखनऊ

एम0 ए0 हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर (द्वितीय प्रश्न पत्र)

- नाम- टी0एस0 इलियट (टॉमस स्टर्न्स इलियट)
  समय – 20 वीं शताब्दी
  कवि, नाटककार, आलोचक
  प्रमुख कृतियाँ --
  काव्य- द बेस्टलैड, फॉर क्वाटर्स,
  नाटक- मर्डर इन द कैथड्रील
  आलोचना- दि सेक्रेड वुड , दि यूज आफ पोयट्री एंड दि यूज ऑफ क्रिटिसिज्म आदि प्रमुख हैं ।

सामान्य परिचय

- इलियट का समय दो विश्व युद्धों के बीच का समय है। इलियट ने अपने काव्य एवं आलोचना में परम्परा और आधुनिकता का अभूतपूर्व समन्वय किया है ।

- इस समय की कविता में आत्मनिर्वासन-अजनबीपन का गहरा एहसास एवं मानव की अस्मिता का संकट खुलकर सामने आने लगा था ।

• इलियट पर एक ओर दांते,एलिजाबेथन , तथा जेकोबियन नाटक का प्रभाव दिखाई देता है तो दूसरी ओर उन्नीसवीं सदी के फ्रांसीसी प्रतीकवादियों की छाप भी दिखाई देती है। विशेष रूप से शैली पर ।

• इलियट ने अपनी आलोचना को "काव्य- कर्मशाला " (POETRY WORKSHOP) का उपजात (BY PRODUCT) या काव्य सृजन के प्रसंग में अपने चिंतन का विस्तार घोषित किया है ।

इलियट के प्रमुख काव्य सिद्धान्त

- परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा (ट्रेडिशन एण्ड इंडिविजुअल टैलेंट)
- निर्वैक्तिकता का सिद्धांत

परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा (ट्रेडिशनल एंड इंडिविजुअल टैलेंट) सिद्धान्त

- टी0एस0 इलियट की आलोचना का प्रमुख आधार है उनका निबंध "परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा । आधुनिक आलोचना में उनका यह सिद्धांत अत्यंत प्रभावशाली और बौद्धिक परिवेश को चुनौती देने वाला है ।इलियट परम्परा में रूढ़ि और मौलिकता के भेद को लेकर चिंतित था ।

• आफ्टर स्ट्रेंज गॉड्स' में इलियट कहता है-" किन्ही मताग्रही विश्वास को पूर्ण रूप से या प्रधान रूप से बनाये रखना ही परम्परा नहीं है, ये विश्वास तो परम्परा के निर्माणक्रम में रूप ग्रहण करते हैं । परम्परा से जो मेरा अभिप्राय है उसमें बहुत कुछ शामिल है । उसमें वे अभ्यासजन्य क्रियाकलाप,आदते और रीति-रिवाज ,तरीके भी शामिल हैं जो एक ही स्थान पर बसे जन -समुदाय के बीच रक्त-संबंधों को प्रकट करते हैं । "

- ***इलियट की परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा सम्बन्धी मान्यताओं को निम्न रूपों में रेखांकित जा सकता है --***

  1- परम्परा का संक्षेप में अर्थ है इतिहास बोध । कवि को इतिहास बोध आवश्यक होता है । इतिहास बोध का अर्थ केवल अतीत का अनुभव नहीं है अपितु उसे वर्तमान में फलित करना भी है। हिन्दी में प्रसाद और अज्ञेय जैसे कवियों की सर्जना में इतिहास बोध लक्षित होता है । इसलिए उनके रचनाओं में वैदिक ऋषियों की वाणी की अनुगूंज सुनाई पड़ती है ।

2- इलियट की मान्यता है कि परम्परा कोई मृत वस्तु नहीं है, वह निरन्तर गतिशील एवं प्रवाहमान है । एक ओर वह वर्तमान को पुष्ट एवं उपयोगी बनाती है तो दूसरी ओर भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करती है ।

3- इलियट के अनुसार रचनाकार के लिए परम्परा सहज एवं अनिवार्य क्रिया है । वह जो भी कुछ पढ़ता है उसके गुण-दोषों का अनुभव वह विवेक से करता है । रचनाकार की अभिव्यक्ति में परम्परा विभिन्न मुद्राओं में होती, कभी मौन तो कभी मुखर ।

4- इलियट परम्परा को हठधर्मिता या अंधानुकरण नहीं मानते । क्योंकि इसमें मौलिकता का अंत हो जाता है । परम्परा व्यापक अर्थ में सृजन कर्म में नवीनता एवं मौलिकता को जन्म देती है । परम्परा दाय या विरासत से प्राप्त नहीं होती अपितु कठोर श्रम आवश्यक होता है।

5- इलियट ने कवि की वैयक्तिक प्रतिभा को भी महत्व दिया है किंतु उनके विचार से परम्परा के अभाव में वैयक्तिक प्रतिभा छाया मात्र है ।

6- पाश्चात्य स्वच्छन्दतावादी कवियों का दावा है कि उनमें प्राचीन के प्रति विरोध है । उनका सृजन उससे पृथक एवं मौलिक है । इलियट इसका खंडन करते हुए कहा है कि कवि उस समय भी परम्परा से जुड़े थे ।

7- प्रायः किसी रचनाकार की समीक्षा करते समय उसकी वैयक्तिक विशेषताओं को खोजकर दिखाने का प्रयत्न होता है । आलोचक पूर्ववर्ती कवियों से उसका काव्य कितना मौलिक है इसपर विशेष ध्यान देते है किंतु इस विषय में ध्यान देने योग्य है कि रचना में कवि का वैयक्तिक पक्ष वही होता है जिसमें वह पूर्ववर्ती रचनाकारों के प्रभाव को मौलिक रूप में व्यक्त करता है । स्पष्ट है कि व्यक्तिगत प्रज्ञा परम्परा से अलग वस्तु नहीं है । परम्परा से गहरे अर्थों में जुड़कर ही कवि अपनी वैक्तिक पहचान बनाता है । तुलसी का रामचरितमानस और निराला की राम की शक्तिपूजा इसके उदाहरण हैं ।

8- अतीत या परम्परा का ज्ञान कवि की रचना को बोझिल करने के लिए नहीं होना चाहिए। ऐसा करने से काव्य संवेदना प्रभावहीन हो जाती है।

9- इलियट का मत है कि कलाकार की महानता या श्रेष्ठता आत्म बलिदान में है, व्यक्तित्व के सतत समर्पण में है । व्यक्तित्व के निर्वैक्तिकरण से ही कला विज्ञान की स्थित को प्राप्त करती है ।

10- परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा इलियट के लिए मूर्त सर्वयुगीनता है जिससे वर्तमान पुरातन से प्रभावित होता है और पुरातन नूतन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत होता है ।

11- परम्परा के जीवंत विकास को इलियट ने इसलिए विशेष महत्त्व दिया क्योंकि उसके आधार पर आत्मनिष्ठ साहित्य के स्थान पर वस्तुनिष्ठ साहित्य की उपयोगिता सिद्ध करता है और कला को भी निर्वैक्तिक घोषित करता है ।

इलियट का निर्वैक्तिकता का सिद्धांत

हिन्दी के कुछ विद्वानों ने इलियट के निर्वैक्तिकता के सिद्धांत को 'काव्यगत अव्यक्तिवाद ' नाम से भी पुकारा है ।

• इलियट का यह सिद्धांत भारतीय काव्यशास्त्र के रस सिद्धान्त के अन्तर्गत मिलने वाली सृजन प्रक्रिया के साधारणीकरण सिद्धांत के अत्यंत समीप माना जाता है।

- इलियट निर्वैक्तिकता को साधारणीकरण के समीप नहीं मानता क्योंकि साधारणीकरण भारतीय दर्शन की चिंतन परम्परा का प्रतिफल है । साधारणीकरण की तुलना में निर्वैक्तिकता का सिद्धांत काफी हलका है ।

• इलियट काव्य सृजन में कवि के व्यक्तित्व की तात्विक उपस्थित का सदैव विरोध करता रहा है । वह एक स्थान पर कहता है--"कवि के पास अभिव्यक्ति करने के लिए ' व्यक्तित्व' नहीं , बल्कि एक विशेष माध्यम होता है, जो केवल माध्यम मात्र ही होता है- व्यक्तित्व नहीं जिसमें विभिन्न प्रभाव और अनुभव विशिष्ट और अप्रत्याशित रूपों में संयुक्त हो जाते हैं । यह सम्भव है कि उन प्रभावों और अनुभवों का जो व्यक्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, कविता में कोई स्थान न हो और जो कविता में महत्वपूर्ण हो, उनकी भूमिका व्यक्ति में , व्यक्तित्व में, व्यक्तित्व विशेष में सर्वथा नगण्य हो।"

• इलियट कविगत भाव और काव्यगत भाव को एक नहीं मानता । इनमें पर्याप्त अन्तर होता है ।

• इलियट के अनुसार आलोचना और संवेदना त्मक परिशंसा का लक्ष्य कवि नहीं बल्कि कविता है ।

• इलियट का मानना है कि 'कविता' भावों का उन्मोचन नहीं है बल्कि भावों से मुक्ति है, वह व्यक्तित्व की अभिव्यंजना नहीं है अपितु व्यक्तित्व से पलायन है ।

• इलियट कहता है कि निर्वैक्तिकता की यह विधि कला को विज्ञान के समकक्ष खड़ा कर देती है । इस बात को स्पष्ट करते हुए उसने एक उत्प्रेरक का सटीक दृष्टांत दिया--"वह कहता है कि जब आक्सीजन और सल्फर डाइ-आक्साइड से युक्त कक्ष या प्रकोष्ठ में लेटिनम के बारीक तार का प्रवेश होता है तो आक्सीजन और सल्फर डाइ-आक्साइड मिलकर सलफ्यूरस बन जाता है । लेटिनम के तार की मौजूदगी में दोनों को मिलाया जाता है तो सल्फ्यूरस एसिड बन जाता है । यह तभी घटित होता है जब लेटिनम मौजूद हो , फिर भी इस नवनिर्मित गैस में लेटिनम का कोई चिन्ह नहीं बचता और स्वयं लेटिनम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता , वह निष्क्रिय, तटस्थ और अपरिवर्तित रहता है । कवि का मानस लेटिनम का तार है ।"

• **इलियट के निर्वैक्तिकता सिद्धांत को निम्न बिन्दुओं में बद्ध किया जा सकता है—**

1- कवि और कविता दोनों अलग सत्ताधारी हैं । कवि के व्यक्तित्व का कविता से सीधा संबंध नहीं होता है । कवि बड़ा इसलिए नहीं होता है कि उसमें अपने अनुभव को वाणी दी, बल्कि इस लिए बड़ा होता है कि उसने अपने निजी अनुभव को नया रूप प्रदान किया ।

- 2- भाव के दो प्रकार हैं- कवि का भाव जो अशुद्ध है, प्रकृत है । दूसरा जो कवि का मुख्य भाव है । यह मुख्य भाव ही निर्वैक्तिकता है । कवि के इतिहास से इसका कोई सरोकार नहीं है ।

- 3- कविता भावों की प्रेरक नहीं अपितु पलायन है । व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं व्यक्तित्व से पलायन है ।

4- कविता महज़ भाव नहीं, न ही स्मृत रूप, न ही एकांत में चिंतन किया गया प्रेषण है । इलियट वर्ड्सवर्थ की कविता की परिभाषा को एक सिरे से नकार देता है ।

5- रचनाकार निर्वैक्तिकता को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता , जब तक वह स्वयं को अपने कविकर्म के लिए समर्पित न कर दे । श्रेष्ठ एवं कालजयी कवि वही होता है जो निरन्तर व्यक्तित्व बहिष्कार करे ।

धन्यवाद